Knowledge and curriculum ①

Page No.:
Date:

1. ज्ञान की अवधारणा एवं स्रोतों का वर्णन करें

उत्तर ज्ञान क्या है?

ज्ञान वह है जो ज्ञात है और जो ज्ञात होने के बाद संचित रहता है या वह जानकारी है जो वास्तविक अनुभव द्वारा प्राप्त होती है। निरपेक्ष सत्य की स्वानुभूति ही ज्ञान है। इसका विभाजन विषयों के आधार पर होता है। पाँच विषय हैं – रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श।

ज्ञान की अवधारणा :→

ज्ञान की अवधारणा को अध्यापन करते समय शिक्षक एवं विद्यार्थी के मन में ज्ञान सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है। ज्ञान के दो पक्ष हैं – प्रत्यक्ष ज्ञान तथा परोक्ष ज्ञान। कई प्रकार से सक्रिय होता है उसे हमें अनुभव तथा तर्क चिन्तन के माध्यम से प्राप्त करते हैं। प्रत्यक्ष ज्ञान मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव के द्वारा प्राप्त करता है परोक्ष ज्ञान हमें दूसरों से कथनों या पुस्तकों द्वारा प्राप्त होता है।

ज्ञान का अर्थ :→ 'ज्ञान' शब्द 'ज्ञ' धातु से बना है जिसका अर्थ जानना, बोध, अनुभव एवं प्रकाश से माना गया है। अर्थात किसी वस्तु के स्वरूप का, जैसा वह है वैसा ही अनुभव या बोध होना ज्ञान है। जैसे – यदि हमें दूर से पानी दिखाई दे रहा है और निकट जाने पर भी हमें पानी ही मिलता है तो कहा जायेगा की हमें अमुक जगह पानी होने का वास्तविक ज्ञान हुआ। इसके विपरीत निकट जाने पर हमें रेत दिखाई दे तो कहा जायेगा की अमुक जगह पानी होने का जो ज्ञान हुआ वह ~~[illegible]~~ गलत था। ज्ञाता के मन में होने वाली एक प्रकार की हलचल है।

Scanned with CamScanner

ज्ञान की परिभाषाएं

* प्रो. रसल — "ज्ञान वह है जो मनुष्य के मन को प्रभावित करता है।"
* सुकरात — "ज्ञान सर्वोच्च सद्गुण है"
* विलियम जेम्स — "ज्ञान व्यावहारिक प्राप्ति और सफलता का दूसरा नाम है।"
* प्रो. जोड — "ज्ञान हमारी उपस्थित जानकारी और अनुभवों के भण्डार में वृद्धि का नाम है।"

ज्ञान के प्रकार :→

अगिमनात्मक ज्ञान हम अपने जीवन के अनुभवों के माध्यम से तथा निरीक्षण के माध्यम से प्राप्त करते है जो कि हमारे समक्ष घटित होती घटना के आधार पर प्राप्त करते है। इसमें अलौकिक सत्ता का कोई स्थान नहीं है।

1. प्रयोगमूलक ज्ञान :→ प्रयोजनवादी मानते है कि ज्ञान प्रयोगों द्वारा प्राप्त होता है हम विधियों का प्रयोग करके तथा किसी भी तथ्य को प्रयोग द्वारा समझते है व आत्मसात करते है।

2. प्रागनुभव ज्ञान :→ स्वयं प्रत्यक्ष की भांति ज्ञान को समझा जाता है यह वह ज्ञान है। जिसको बुद्धि अनुभव की सहायता के बिना प्राप्त करते है जाने वो और वो यह होते है इस बात को प्रमाणित करने के लिए किसी प्रकार के अनुभव की आवश्यकता नहीं

3 उपनिषद :— उपनिषद में ज्ञान हेतु विद्या शब्द का प्रयोग किया है। जिसमें ज्ञान के दो प्रकार बताए गए है

Page No.:
Date:

(i) परा विद्या :- इस प्रकार का ज्ञान भौतिक संसार व बाह्य प्रकृति से सम्बन्धित होता है

(ii) अपरा विद्या :- यह ज्ञान मानव प्रकृति का सर्वोच्च ज्ञान है। व्यक्ति के स्वयं को जानने आत्मा से और परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाले ज्ञान से है।

4. जैन दर्शन :- जैन दर्शन ने ज्ञान के पांच प्रकार बताए हैं
1. मति ज्ञान ② श्रुति ज्ञान ③ अवधि ज्ञान
4. मन: पर्याय ज्ञान ⑤ कैवल्य ज्ञान

5. न्याय दर्शन :- न्याय दर्शन के अन्तर्गत चार प्रकार
① प्रत्यक्ष ज्ञान ② अनुमेय ज्ञान ③ उपमेय ④ शब्द

6. सांख्य दर्शन :-
① प्रत्यक्ष ज्ञान ② अनुमानित ज्ञान ③ शाब्दिक ज्ञान

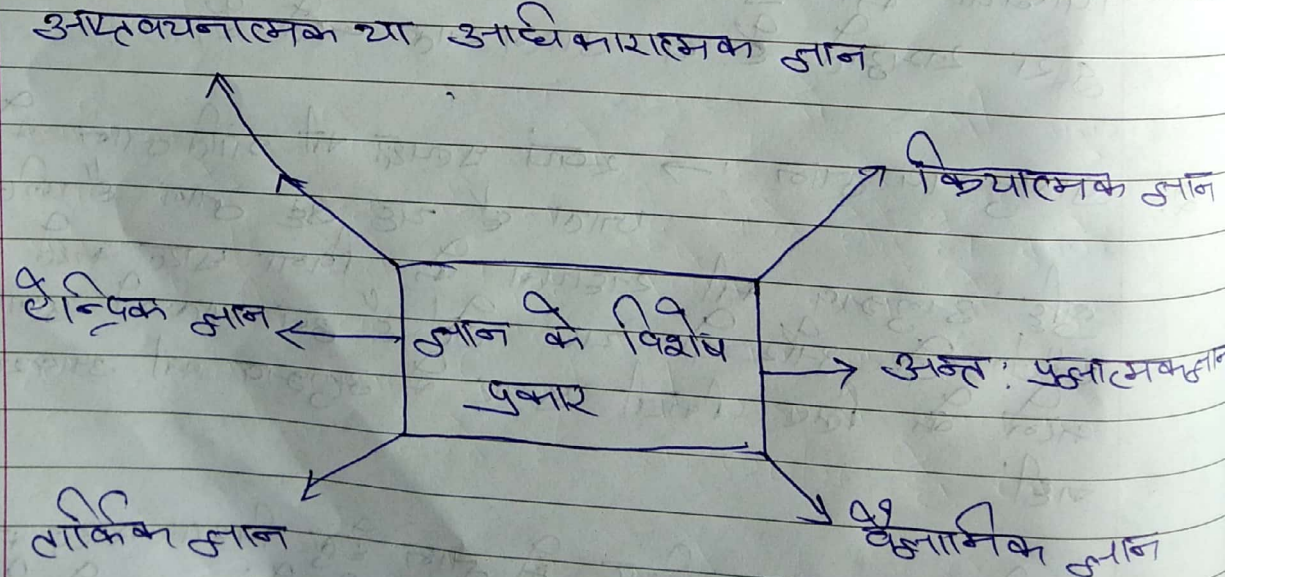

ज्ञान के स्रोत :→ सदैव हम ज्ञान को एक-दूसरे को देखकर तथा उनकी बातों को सुनकर प्राप्त करते हैं चाहे वह प्रत्यक्ष रूप या अप्रत्यक्ष रूप प्रत्येक व्यक्ति अपनी मानसिक एवं शारीरिक योग्यता-नुसार सीखता है और अपना व्यवहार करता है

1. इन्द्रिय अनुभव :→ इन्द्रिय अर्थात शारीरिक अंग जो कि मनुष्य को उसकी जीवितता का आभास कराते हैं वह सदैव उन्हीं के द्वारा अनुभव करता जाता है और संवेदना जागृत करता जाता है अनुभव के आधार पर वह प्रत्येक व्यक्ति अपनी कार्यशैली और प्रत्यक्षीकरण करती है अर्थात प्रत्येक पदार्थों से जो कि हमारे जीवन को चलाने में संचालित करते हैं उनके सहारे ही हम आगे बढ़ते हैं।

2. साक्ष्य :→ साक्ष्य के द्वारा हम दूसरों के अनुभवों एवं आधारित ज्ञान को मानते हैं जो हम अपने अनुभवों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। साक्ष्य में व्यक्ति स्वयं निरीक्षण नहीं करता है दूसरों के निरीक्षण पर ही तथ्यों का ज्ञान लेता है। हम किसी अन्य के अनुभव के द्वारा ही सीखते हैं।

3. तर्क बुद्धि :→ प्रतिदिन जीवन में होने वाले अनुभवों से हमें ज्ञान प्राप्त होता है तथा यही ज्ञान हमारा तर्क में परिवर्तित हो जाता है जब हम उसे प्रमाण के साथ स्पष्ट कर स्वीकार करते हैं अ तर्क द्वारा हम संगठित करके हम ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह एक मानसिक प्रक्रिया है।

Scanned with CamScanner

4 अन्तःप्रज्ञा :→ इसका तात्पर्य है किसी तथ्य को पा जाने इसके लिए किसी भी तर्क की आवश्यकता नहीं होती है, इसके द्वारा उस ज्ञान में पूर्ण विश्वास हो जाता है

5 आप्त वचन :→ इसमें व्यक्ति प्रत्यक्ष एवं तर्क आदि के आधार पर स्वयं ज्ञान प्राप्त किया है। आप्त वचन ज्ञान के स्त्रोत सदैव विश्वसनीय नहीं होते। उनसे प्राप्त ज्ञान को अपने अनुभव व तर्क के आधार पर परीक्षण करने के बाद ही स्वीकार करना चाहिए

6 श्रुति :— जो ज्ञान सुनने या प्रकट होने के साथ हो लेकि श्रुति से प्राप्त ज्ञान कितना प्रामाणिक है यह बताना कठिन है।

7 आस्था :→ इसका अर्थ है लगाव। प्रत्येक संस्कृति में कुछ ऐसी बातें होती हैं जिन पर हमारी आस्था केवल इसलिए होती है क्योंकि वह परम्परागत रूप में प्राचीनकाल से ही चली आ रही हैं।

8 अनुकरणीय ज्ञान :→ मानव समाज में सभी मनुष्य विभिन्न मानसिक शक्तियों के हैं कुछ बहुत ही तीव्र बुद्धि वाले कुछ निम्न बुद्धि वाले होते हैं इनमें जो प्रतिभाशाली होते हैं वह प्रत्येक कार्य को इस प्रकार करते हैं कि वह सैद्धान्तिक बन जाता है। अतः उनके द्वारा किया गया किसी भी ढंग में कार्य जिसको हम स्वीकार करते हैं अनुकरणीय हो जाता है

निष्कर्ष :→ अतः हम कह सकते हैं कि विभिन्न दार्शनिकों ने ज्ञान के अनेक स्त्रोत बताए हैं। लेकिन ये सभी स्त्रोत परस्पर विरोधी न होकर एक-दूसरे से पृथक हैं।

① Knowledge and curriculum

Q2 ज्ञान प्राप्त करने की कौन-सी विधियाँ हैं उनकी प्रकृति व महत्व का सविस्तार से वर्णन करें।

Ans मानव प्रकृति से ही जिज्ञासाशील है, वह अपने आस-पास के वातावरण अनेक जानकारी प्राप्त कर लेता है। जैसे आज का युग विज्ञान का युग है वह अपने ज्ञान को आधुनिकता के साथ जोड़ने का प्रयास कर रहा है व्यक्ति बदलती हुए परिस्थितियों में अपने आप को बदल रहा है ज्ञान की प्राप्ति की जिज्ञासा प्रत्येक आयुवर्ग के लोगों में होती है छोटे से बालक से लेकर प्रौढ़ व्यक्तियों में भी देखने को मिलती है। बालक तथा प्रौढ़ का मानसिक, शारीरिक तथा बौद्धिक विकास निरन्तर होता रहता है।

ज्ञान प्राप्ति की विधियाँ :→

1. अवलोकन विधि :- बच्चे जिस वस्तु का अवलोकन करता है उसको जल्दी सिख लेते है अवलोकन करने से अनेक बातों का ज्ञान होता है जहां अवलोकन होगा वही निरीक्षण होगा बच्चा निरीक्षण के आधार पर ही अनुभव करता है। फिर अनुभवों से अपने जीवन के समाज व देश से जोड़ने का प्रयास करता है।

2. करके सीखना :→ इस विधि में बच्चा प्रत्येक कार्य को प्रत्यक्ष रुप से सीखता है वह इन्द्रियों द्वारा कोई भी कार्य सरलता से कर लेता है। बच्चा जिस भी कार्य को स्वयं करता है वह जल्दी सीख भी जाता है। बालक जो भी कार्य करता है उस कार्य से सम्बन्धित उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है। तथा उसमें आत्म-विश्वास भी बढ़ता है।

Scanned with CamScanner

3. अनुभव से सीखना :→ जब कोई व्यक्ति कार्य करता है तो वह स्वयं अनुभव करके ज्ञान प्राप्त करता है जैसे हम दूसरों के किसी भी कार्य को करता देखकर भी तरह उसी कार्य को नहीं कर पाते। इसी प्रकार हम सत्य का ज्ञान दूसरों के अनुभव द्वारा प्राप्त नहीं कर पाते तथा वह स्वयं उस कार्य को खोजते है जिससे उसे अपने स्वयं को अनुभव प्राप्त होता है वह खोजी भी बनाता है

4. तर्क बुद्धि :→ कई बार बालक को ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी तर्क बुद्धि का प्रयोग करना पड़ता है। वह कोई भी कार्य कर रहा है तो वह तर्क-वितर्क करते हुए विवेक ज्ञान अर्जित कर लेता है

5. आगमन विधि :→ उस विधि द्वारा बालकों का ध्यान अनेक विशेष उदाहरणों की ओर आकर्षित किया जाता है उन विशेष उदाहरणों की सहायता से एक सामान्य सिद्धान्त का निर्माण कर लेते है यह विधि भूगोल, गणित, विज्ञान, भाषा व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत उपयोगी है।

6. निगमन विधि :- यह विधि आगमन विधि के बिल्कुल विपरीत है। उस विधि में नियम पहले बताये जाता है फिर उदाहरणों बताए जाता है उस विधि मे नियम तो पहले से पता होता है फिर उस नियम की सत्यता को परखा जाता है

7 अन्तःप्रज्ञा :→ इस विधि को सहज बोध भी कहा गया है। सहज बोध का स्वरूप समग्रता की अनुभूति से है। मानव का ज्ञान इसी अनुभूति से प्रारम्भ हुआ। बुद्धि का विश्लेषण, सामान्यीकरण, विशेषीकरण जैसी प्रक्रियाएँ बाद में आती हैं अन्तःप्रज्ञा के दार्शनिक के रूप में प्रकृति जीवन और जगत के वास्तविक स्वरूप को समझने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया है।

8 आप्त वचन :→ यह वह ज्ञान है जो आप्तों की प्राप्ति के लिए हमें विशेषज्ञ तथा अधिकारियों पर निर्भर रहना पड़ता है इस ज्ञान का न तो सम्बन्ध इन्द्रियानुभव से है और न ही बुद्धि वर्ग से। यह ज्ञान तो हमें विशेषज्ञों से विश्वास करके ही प्राप्त करते हैं यह ज्ञान सच्चे रूप में स्वीकृत होता है जैसे सूर्य स्थिर है।

9 एकाग्रता और ध्यान। ज्ञान प्राप्ति की सबसे उपयुक्त विधि एकाग्रता है। मानसिक शक्तियों को एक बिन्दु पर केन्द्रित करके हम कठिन से कठिन विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए एक के साथ-2 ध्यान क्रिया का होना भी बहुत जरूरी है।

10 समस्या समाधान विधि। यह विधि मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए बहुत उपयोगी है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि होती है समस्याओं का पहले से बना बनाया समाधान नहीं होता। समस्या के आने पर ही उसके समाधान के लिए चिन्तन प्रक्रिया प्रारम्भ होती है चिन्तन प्रक्रिया मनुष्य को ज्ञान प्रदान करती है यह विधि प्रयोजनवादियों पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

ज्ञान का महत्व !—

1. ज्ञान विश्व के रहस्यों को खोजता है
2. ज्ञान से चरित्र निर्माण व बोध होता है
3. धर्म की भांति ज्ञान को भी जानने के लिए अनुभव करने चाहिए।
4. ज्ञान शक्ति, शमय का परिणाम है
5. ज्ञान को मनुष्य की तीसरी आँख कहा गया है
6. ज्ञान ही गुण है मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।
7. प्रेम तथा मानव स्वतन्त्रता के सिद्धान्तों का आधार है
8. मनुष्य ज्ञान के द्वारा अपना तथा दूसरों के कार्य करने में सक्षम होता है
9. ज्ञान शिक्षा प्राप्ति हेतु साधन का काम करता है
10. नैतिकता ज्ञान से ही प्राप्त होती है।
11. एक बार प्राप्त किया गया ज्ञान सतत प्रयोग किया जाने वाला बन जाता है

ज्ञान की प्रकृति !—

1. ज्ञान कभी भी समाप्त नहीं होता।
2. ज्ञान के शक्ति है, ताकत है।
3. ज्ञान सत्य तक पहुंचने का साधन है।
4. ज्ञान क्रमबद्ध बढ़ता रहता है एकदम अचानक से नहीं मिल जाता।
5. ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती
6. ज्ञान अनिश्चित तथा सूचना ज्ञान का स्त्रोत है
7. धन की तरह है जितना एक मनुष्य को प्राप्त होता है वह उतना ही ज्यादा जाने की इच्छा रखता है।

Scanned with CamScanner

Unit-1

Q3 सूचना तथा ज्ञान के बारे में आप क्या जानते है, सूचना तथा ज्ञान के संबंध का वर्णन कीजिए। सूचना तथा ज्ञान में क्या अंतर है

Ans सूचना एक मानवीय विचार है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मानवीय गतिविधियों से सीधा जुड़ा रहता है। समाज में जब किसी चीज की आवश्यकता होती है। तो उस पर सोच होती है। नई परिकल्पनाएं जन्म लेती है नये विचार मानव-मस्तिष्क में आते है। पांच ज्ञानेन्द्रियो के जरिये ग्रहण की गई संवेदनाओं को तभी तन्त्रिकाओं के जरिये मस्तिष्क में ले जाया जाता है। मस्तिष्क कम्प्युटर के सीपीयु की तरह उनका संचालन करके एक विचार का रूप देता है। उससे नए तथ्य उत्पन्न होते है उन्हे सूचनाएं कहते है जब जानने वाले तथा जानकार के बीच अन्तः क्रिया होती है उन्हें भी सूचना का नाम दिया जाता है

सूचना का अर्थ :→ सूचना को अंग्रेजी में Information कहा जाता है। Information शब्द Latin भाषा के Infomare से बना है। जिसका मतलब है जानकारी उपलब्ध कराना। अवगत कराने, बतलाने व जताने के लिए कही गई बात सूचना है। तथ्य आंकड़े, डाटा आदि को सूचना माना जाता है।

परिभाषाएं

* शेवली व टानर के अनुसार " सूचना वह आंकड़े है। जो व्यक्तियों के मध्य से प्रेषित हो सके तथा प्रत्येक व्यक्ति उसका प्रयोग कर सके"।

जे बेकर के शब्दो में " किसी विषय से सम्बन्धित तथ्यों को सूचना कहते है"

Page No.
Date

बेल के अनुसार! → " सूचना समाचारों, तथ्यों, आंकड़ो प्रतिवेदनों, अधिनियमों कर संहिताओं, न्यायिक निर्णयों प्रस्तावों और इसी तरह की अन्य चीजों से सम्बन्धित होती है"

सूचना के प्रकार—

1. प्रत्ययात्मक सूचना! → इसके अन्तर्गत किसी समस्या के अस्थिर क्षेत्रों से उत्पन्न होने वाले विचार, सिद्धान्त व परिकल्पनाएं इत्यादि आती है।

2. अनुभव सिद्ध सूचना! → इसके अन्तर्गत प्रयोगशाला जनित साहित्यिक खोज तथा शोध हेतु स्वयं के अनुभवों द्वारा प्राप्त आंकड़े आते है।

3. कार्यविधिक सूचना! → इस प्रकार की सूचना के अन्तर्गत उन विधि को सम्मिलित किया जाता है जिसके द्वारा शोधकर्ता को और अधिक प्रभावी ढंग से कार्य करने योग्य बनाया जा सके।

4. प्रेरक सूचना!- मनुष्य हमेशा से ही प्रेरणाशील रहा है इसके लिए उसे दो तत्व प्रभावित करते हैं। एक वह स्वयं तथा दूसरा वहां का वातावरण, मिलने वाली सूचना अधिक प्रभावी होती है।

5. नीति सम्बन्धी सूचना! → इसके अन्तर्गत निर्णय निर्धारण प्रक्रिया से सम्बन्धित सूचना आती है इसके अन्तर्गत संयुक्त गतिविधियों, उद्देश्य, जिम्मेदारियों का निर्धारण, कार्यों का विकेन्द्रीकरण आदि को सम्मिलित किया जा सकता है

6. दिशा सूचक सूचना :- बिना सहयोग के सामूहिक गतिविधियां प्रभावी तरीके से अग्रसर नहीं हो सकती हैं तथा यह दिशा सूचक सूचना ही है जिसके द्वारा ही सहयोग एवं समन्वय प्राप्त किया जाता है

सूचना की विशेषताएं

1. कई बार सूचनाएं पहले तो उपलब्ध नहीं होती, लेकिन बाद में उपलब्ध हो जाती हैं। बाद में उपलब्ध सूचनाएं व्यक्ति के लिए नई होती हैं तथा व्यक्ति के लिए निर्णय लेने में बहुत लाभदायक होती हैं

2. सूचना बिल्कुल सही होनी चाहिए। गलत सूचना किसी व्यक्ति या संस्था को हानि पहुंचा सकती है

3 सूचना समयबद्धता के अनुसार होनी चाहिए देर से उपलब्ध सूचना लाभकारी नहीं रहती।

4 सम्पूर्ण सूचना ही लाभकारी होती है

5 सूचना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए इससे सूचना का मूल्य बढ़ता है।

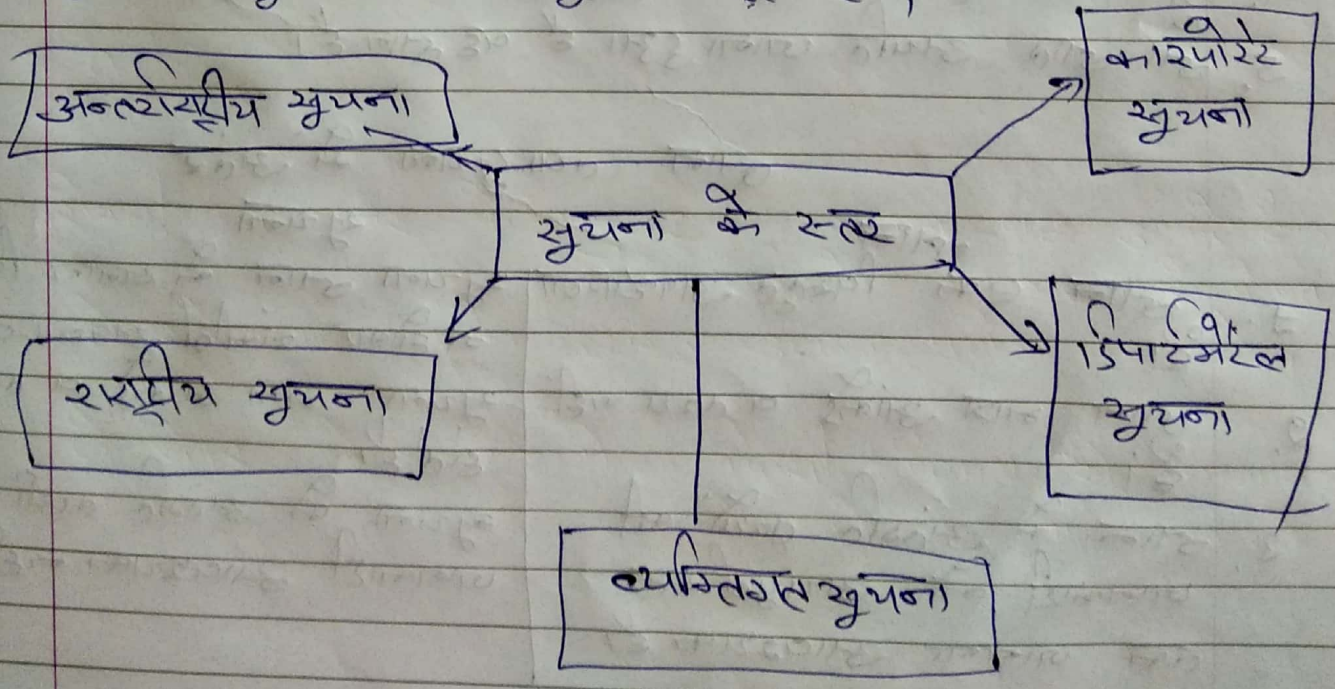

Page No.:
Date:

सूचना तथा ज्ञान के संबंध

शिक्षा व दर्शन के क्षेत्र में ज्ञान व सूचना दोनों के संबंध के बारे में बताया है सूचना का सम्बन्ध किसी विषय से सम्बन्धित तथ्यों को सूचना कहते हैं ज्ञान का दर्शन के साथ घनिष्ठ संबंध है। दर्शन में ज्ञान का अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम जीवन, जगत, आत्मा तथा परमात्मा आदि के विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन का उद्देश्य है।

ज्ञान के अनेक अर्थ बताए

1. किसी भी प्रकार की जानकारी अथवा विषय से संबंधित जानकारी ज्ञान है।

2. स्वयं के अनुभवों तथा प्रशिक्षण के द्वारा जो अधिगम होता है। वह ज्ञान है।

3. अपने अनुभवों व चिंतन के आधार पर व्यक्ति के जो निश्चित विश्वास बन जाते हैं वही ज्ञान है।

4. जो व्यक्ति के मन में प्रकाशित हो गया वह ज्ञान है।
5. जो ज्ञात अर्थात जाना हुआ है वह ज्ञान है।

ज्ञान तथा सूचना में अंतर

	ज्ञान	सूचना
1.	ज्ञान एक विस्तृत अवधारणा है	सूचना ज्ञान के समान विस्तृत न होकर संकीर्ण अवधारणा है
2.	ज्ञान मात्र आंकड़े व तथ्य नहीं हैं	सूचना मात्र आंकड़े व तथ्य होते हैं
3.	ज्ञान के अंतर्गत तथ्यों की जानकारी को अर्थपूर्ण स्तर तक जानना आवश्यक है	सूचना के अंतर्गत तथ्यों की जानकारी आवश्यक नहीं है

Scanned with CamScanner

(5)

	ज्ञान	सूचना
4.	ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में मानसिक परिवर्तन और मानसिक वृद्धि होती है	सूचना प्राप्ति में किसी भी प्रकार के मानसिक परिवर्तन तथा मानसिक वृद्धि नहीं होती है
5.	ज्ञान व्यक्ति के अनुभवों का परिणाम है	सूचनों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया किया जाना चाहिए
6.	ज्ञान व्यक्ति के अन्तःकरण को प्रकाशित कर देता है	दैनिक जीवन में सूचना को एक दूसरे के लिए प्रयुक्त करते है

Scanned with CamScanner